तृतीय प्रश्न-पत्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास

प्रस्तावना

किसी भी देश के जनमानस की मनोवृत्ति, दशा एवं संवेदना के विविध स्वरूपों का संचित रूप वहाँ के साहित्य में परिलक्षित होता है।सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न परिस्थितियों के कारण चित्तवृत्तियों में परिवर्तन होता है। फलतः साहित्यिक रूपों में भी बदलाव आ जाता है। इस बदली हुई विकास प्रक्रिया को साहित्य के इतिहास के माध्यम से ही देखा-परखा जा सकता है। हिन्दी क्षेत्र की परिस्थितियों से कमोबेश पूरा भारत प्रभावित होता रहा है जिसकी गूँज हिन्दी साहित्य में प्रतिध्वनित है। आठवीं-नवीं शताब्दी से लेकर आज तक के विकास परिदृश्य के साथ साहित्यिक सृजनशीलता के विविध रूपों, प्रवृत्तियों और भाषा-शैलियों का ज्ञान हिन्दी साहित्य के इतिहास के माध्यम से ही किया जा सकता है। अतः इसका अध्ययन सर्वथा सार्थक एवं समीचीन है।

पाठ्य विषय

प्रथम इकाई

- इतिहास - दर्शन और साहित्येतिहास।
- हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा, आधारभूत सामग्री और साहित्येतिहास के पुनलेखन की समस्याएँ।
- हिन्दी साहित्य का इतिहास : काल-विभाजन, सीमा-निर्धारण ओर नामकरण।

द्वितीय इकाई

- हिन्दी साहित्य के आदिकाल का ऐतिहासिक परिदृश्य, साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, काव्यधाराएँ, गद्य साहित्य प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएँ।
- पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक-चेतना एवं भक्ति-आंदोलन, विभिन्न काव्यधाराएँ तथा उनका वैशिष्ट्य।
- प्रमुख निर्गुण संत कवि और उनका अवदान।
- भारत में सूफी मत का विकास तथा प्रमुख सूफी कवि और काव्यग्रंथ, सूफी काव्य में भारतीय संस्कृति एवं लोकजीवन के तत्व।
- राम और कृष्ण काव्य, रामकृष्ण काव्येतर काव्य, भक्तीतर काव्य, प्रमुख कवि और उनका रचनागत वैशिष्ट्य। भक्तिकालीन गद्य-साहित्य।

तृतीय इकाई

- उत्तरमध्यकाल (रीतिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, काल-सीमा और नामकरण, दरबारी संस्कृति और लक्षण-ग्रंथों की परांपरा,रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराएँ (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त) प्रवृत्तियाँ ओर विशेषताएँ, प्रतिनिधि रचनाकार और रचनाएँ। रीतिकालीन गद्य साहित्य।

चतुर्थ इकाई

- आधुनिककाल की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सन् 1857 ई. की राजक्रांति और पुनर्जागरण।

पंचम इकाई

- भारतेंदु युग : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
- द्विवेदी युग : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषतएँ।
- हिन्दी स्वच्छंदतावादी चेतना का अग्रिम विकास-छायावादी काव्य : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ
- उत्तरछायावादी काव्य की विविध प्रवृत्तियाँ : प्रगतिवादी, प्रयोगवाद, नयी कविता, नवगीत, समकालीन कविता। प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।

- हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज आदि) का विकास।
- हिन्दी आलोचना का उद्‌भव और विकास

I **संदर्भ ग्रंथ**

हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल, काशी नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी।

II **हिन्दी साहित्यः** उद्‌भव और विकास,
हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

III **सम्पूर्ण पाठ्‌यक्रम को ध्यान में रखकर प्रस्तावितः**

हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली।

- हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरुप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद।